ओम् शान्ति 27-8-07 मधुबन

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा श्रेष्ठ स्वमान में रह सबको सम्मान देने वाले, ड्रामा की हर सीन को साक्षीदृष्टा बन देखने वाले, सदा अचल-अडोल स्थिति के आसन पर विराजमान सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

मधुर स्नेह सम्पन्न हार्दिक यादप्यार मधुबन बेहद घर से स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों की अति प्रिय, विश्व की दादी सो हम सबकी अति मीठी परमश्रृद्धेय आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी का पूरा समाचार, अन्तिम यात्रा के सभी दृष्य, आप सबने टी.वी. चैनल्स द्वारा देखे वा सुने होंगे। दादी जी के अव्यक्त होने का समाचार सुनते ही देश विदेश के हजारों भाई बहिनों का शान्तिवन में पहुंचना शुरू हो गया। लगभग 15-16 हजार भाई बहिनें 27 तारीख सवेरे तक शान्तिवन में पहुंच गये। दादी जी ने 25 तारीख शनिवार के दिन सवेरे 10 बजकर 5 मिनट पर सभी मुख्य दादियों और वरिष्ठ भाई-बहिनों के सम्मुख अपना पुराना चोला छोड़ बापदादा की गोद में समा गई। यह दृश्य सबके लिए असहयनीय तो था लेकिन ड्रामा की भावी...। दादी जी ने साकार बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात जो देश विदेश में अपनी अथक सेवाओं की छाप हर एक के दिल पर छोड़ी है, जो सबको मातृ स्नेह की पालना दी है, जो प्रेम, दया, रहम और क्षमा की मूर्ति बनकर सबको सम्मान दिया और सबको आगे बढ़ाया है, उसका प्रैक्टिकल स्वरूप हर एक के दिल में दादी जी के प्रति अटूट स्नेह की छाप है, चाहे वह बाबा का बी.के. बच्चा हो या स्नेही सहयोगी, जो भी दादी के सानिध्य में आया, दादी ने उसे अपनी नज़रों से निहाल किया, स्नेह की दृष्टि, श्रेष्ठ वृत्ति और मधुर वाणी से बाबा के समीप लाई, ऐसी मीठी प्यारी दादी का समाचार सुनते ही सभी ने स्नेह के स्वरूप में या तो सम्मुख पहुंचने का प्रयास किया या अपने श्रद्धा-सुमन ईमेल, फोन द्वारा व्यक्त किये। देश विदेश के हजारों भाई बहिनों ने दादी जी के प्रति अपनी दिल की भावनायें प्रकट की। आबू निवासी भी दादी के अन्तिम दर्शन के लिए लम्बी कतार में आते अपनी श्रंद्धाजलि देते रहे और दादी जी के सम्मान में आज आबू तथा आबूरोड की पूरी बाजार भी बंद रखी। 26 तारीख को आबू की परिक्रमा कराते, दादी जी के पार्थिव शरीर को चारों धामों की यात्रा कराई गई और 11 बजे से 1 बजे तक आबू निवासियों के दर्शन के लिए ओम शान्ति भवन में उनके पार्थिव शरीर को रखा गया। यह सभी दृश्य चैनल्स द्वारा लाइव दिखाये जा रहे थे। देश विदेश में प्रतिदिन के समाचार टी.वी. अखबारों के माध्यम से हर एक तक पहुंचते रहे। आज सवेरे गुजरात राज्य के मुख्य मंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी जी तथा अन्य कई मंत्रीगण भी अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करने पधारे, साथ-साथ हरिद्वार से साधू समाज का प्रतिनिधत्व करने उदासीन अखाड़े के महामण्डलेश्वर स्वामी गंगादास जी, लखनऊ से विश्व शान्ति आश्रम के महन्त, आबू से रघुनाथ मंदिर के महन्त तथा अन्य कई स्थानों के गणमान्य व्यक्ति अपनी श्रंद्धाजलि देने शान्तिवन में पहुंच गये। सभी की उपस्थिति में ठीक 10.30 बजे मुख्य भाई बहिनों ने दादी जी को अपने स्नेह सुमन व्यक्त करते हुए चन्दन की शैया पर मुखाग्नि दे अन्तिम विदा दी। ऐसे लग रहा था जैसे पूरा ही शान्तिवन शान्तिधाम बन गया है, कुछ पलों के लिए जैसे सभी की धड़कनें भी शान्ति के प्रकम्पन्न वायुमण्डल में फैला रही थी। उसके पश्चात सभी स्नान आदि करके डायमण्ड हाल के सभागार में पहुंचे, जहाँ मोहिनी बहन ने प्यारे बापदादा वा दादी जी को यज्ञ का भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा दादी जी के प्रति गुल्जार बच्ची द्वारा बापदादा सन्देश भेजेंगे। उसी प्रमाण आज शाम के समय दादी गुल्जार ने प्यारे बापदादा को भोग लगाया, बापदादा ने जो सन्देश दिया, वह आपके पास भेज रहे हैं।

अच्छा - सभी को याद... ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 27-8-07 मधुबन

दादी जी के प्रति विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (दादी गुल्जार)

आप सभी की बहुत-बहुत दिल की यादें और प्यार लेते हुए मैं वतन में पहुंची, तो आज क्या देखा कि हमारी मीठी-मीठी दादी बाबा के साथ थी और सामने से दोनों ही हमें दृष्टि दे रहे थे। दादी बहुत शक्तिशाली स्वरूप में नज़र आ रही थी। मैं नजदीक जाकर पहुंची तो बाबा ने कहा ''आओ मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे आओ'', दादी मुस्करा रही थी। बाबा ने ऐसे हाथ किया, तो जैसे दादी एक तरफ से बाबा की बांहों में और मैं दूसरी तरफ से बाबा की बांहों में समा गई। फिर बाबा अपने साथ हम दोनों को अपने कमरे में लेकर चले और गद्दी पर बैठ गये और कहा बच्ची आप सभी की यादप्यार लेकर आई हो। तो दादी ने कहा आज तो मेरे लिए भी यादप्यार लाई होगी ना! मैंने कहा दादी आपके लिए तो सभी ने पदमापदमगुणा यादप्यार दिया है। सभी कह रहे हैं, कहाँ है हमारी दादी, कहाँ है दादी। तो बाबा ने कहा देखो, बच्ची की काफी समय से दिल में यही आशा थी कि मैं बाबा समान स्थिति का अनुभव करूं। जैसे ब्रह्मा बाबा इस शरीर के बंधन को छोड़कर अव्यक्त हो गये और अव्यक्त रूप से बाबा कितनी सेवायें कर रहे हैं, ऐसे मेरा भी पार्ट ब्रह्मा बाबा के समान हो। तो बच्ची की जो अन्दर में आशा थी उसको बाबा ने समय अनुसार पूरा किया। तो मैंने कहा बाबा अभी तो हमको नहीं लगता कि दादी ऐसे अव्यक्त हो जाए, हम सब तो दादी के साथ ही व्यक्त शरीर में होते भी अव्यक्त में सेवा करने चाहते हैं। तो दादी मुस्करा रही थी, बोला कुछ नहीं। तो बाबा ने कहा दादी की यही आशा थी कि जैसे बाबा ने हमको स्थूल धन की विल की, ऐसे ही मुझे ब्रह्मा बाप के समान स्थिति के अनुभव की विल करे। तो बाबा इस बच्ची को सिर्फ बच्ची नहीं कहता लेकिन यह मेरा तीन तख्त नशीन विशेष बच्चा है। गुरूभाई से भी बड़ा समान बच्चा है। इसलिए बाबा ने बच्ची के दिल की आश रखी। मैंने कहा बाबा सभी का उल्हना यही है कि कम से कम दादी बोलकर तो जाती। तो दादी ने मुस्कराकर कहा, ब्रह्मा बाप पूछ कर गया क्या! जैसे ब्रह्मा बाबा आये वैसे मैं भी आ गई। हमने कहा दादी आप समझती हो हम सब आपको छोड़ेंगे थोड़ेही। तो दादी मुस्कराई, बाबा जाने मैं जानूं, अभी तो मैं बाबा के पास आ गई हूँ, बड़े नशे से कह रही थी। उसके बाद बाबा ने समाचार पूछा - मैने कहा बाबा समाचार तो यही है कि भारत के कोने कोने में दादी की याद समाई हुई है। ब्राह्मण परिवार के मन में तो है ही, लेकिन दादी ने जो भी सेवा की है, उन सेवा वाली आत्माओं के पास दादी के लिए कितना प्यार है, यह तो हम लोग देख ही रहे हैं। वी.आई.पी. हो, कोई भी हो दादी शब्द ऐसे बोलता है जैसे दादी उनकी दादी है। तो बाबा ने कहा यह है दादी का बचपन से लेके निर्विघ्न, निर्विकल्प निर्मल वाणी में रहने का फल। तो यह सूक्ष्म पुरुषार्थ भी क्या होता है, उसका प्रैक्टिकल स्वरूप, हर एक बच्चा साकार में देख रहा है कि बच्ची ने जो गुप्त पुरुषार्थ, दिल से पुरुषार्थ किया है, दिल से सभी को प्यार दिया है, सन्देश दिया है तो आज सन्देश देने वाले और प्यार लेने वाली आत्मायें सब दादी को ऐसे ही याद करती हैं जैसे ब्रह्मा बाप समान। तो ऐसे कहने के बाद मैंने कहा कम से कम दादी आंख तो खोलती ना, ऐसे ही दादी बेड पर गई। बाबा ने कहा वह बेड पर नहीं थी, लेकिन बाबा के वतन में ही थी। पेशेन्ट नहीं थी लेकिन सभी को पेशन्स में रहने की शिक्षा अपने स्वरूप से दे रही थी।

तो बाबा ने कहा तुम लोगों ने नोट किया कि इतनी बीमारियां होते हुए भी कोई दु:ख का संकल्प मात्र भी चिन्ह नहीं था। हमने कहा यह तो कमाल हम सब देखते थे, महसूस करते थे कि दादी को तकलीफ होगी,

लेकिन दादी को पूछते थे - दादी आपको कुछ हो रहा है तो दादी कहती थी नहीं। तो बाबा ने कहा यह भी दादी शिक्षा दे रही थी कि पेशेन्ट होते हुए भी पेशन्स की स्थिति में रहना क्या होता है, दु:ख की लहर तो स्वप्न मात्र भी नहीं थी क्योंकि बचपन से जब से आई जन्मते ही दादी ने पुरुषार्थ में कोई कमी नहीं की, जैसे आपकी मम्मा कहती थी कि बाबा ने कहा और मैंने किया, ऐसे ही मम्मा बाबा की सहयोगी, समान आत्मा रही। तो मैंने कहा बाबा ऐसी आत्मा की तो साकार में आवश्यकता है ना। तो बाबा ने कहा, अभी देखो बच्ची एक तरफ यह कहते, दूसरे तरफ दादी ने कर्मातीत अवस्था, कर्मातीत अवस्था की धुन लगाई हुई थी। तो बाबा एकदम सहयोगी, समान बच्ची की दिल रखेगा या आपकी। हमने कहा हम तो बहुत हैं, दादी तो एक है, तो बाबा आपको बहुतों की दिल रखनी चाहिए। दादी ने कहा मैंने बाबा से एक मांगनी की है, मैंने बाबा से कहा है मुझे कुछ दिन वतन में ही रखो। जैसे ब्रह्मा बाबा शरीर छोड़ने के बाद भी विश्व की सेवा में बहुत-बहुत सहयोग दे रहे हैं। ऐसे मैं भी ब्रह्मा बाबा के समान अव्यक्त रूप में सेवा क्या होती है, वह अनुभव करने चाहती हूँ। तो बाबा ने कहा मैं मुरब्बी बच्चे के दिल की बात को पूरा न करूं यह हो ही नहीं सकता, पहले बच्ची, क्योंकि यह बच्ची सदा निर्विघ्न, सदा स्वमानधारी और सम्मानधारी मूर्ति बनकर रही है, कोई भी विघ्नके वश नहीं रही है, विजयी रही है, विजयी बनाया है, इसलिए बाबा बच्ची को गिफ्ट देता है, 12 दिन तक वतन में रखेगा। मैंने कहा फिर क्या होगा? तो बाबा ने कहा तुम देखने चाहती हो! इतने में क्या देखा एडवांस पार्टी के 10-12 मुख्य इमर्ज हो गये, जो भी विशेष गये हैं, दीदी, मम्मा, विश्व किशोर... वह ऐसे दादी को चिपक गये, कोई कुछ पकड़े, कोई कुछ पकड़े, कहने लगे दादी हमारी है, दादी हमारी है। हमने कहा यह तो नारा लगाने लगे, कहा आपके साथ इतना रही है, अभी दादी हमारी भी है, दादी को विशेष कार्य के लिए बाबा ने बुलाया है। तो दादी ने कहा मुझे इतना अच्छा लग रहा है वतन में, मैं सब कुछ देख रही हूँ, जहाँ जाने चाहूं, जिस सेन्टर पर जाने चाहूं सेकण्ड में पहुंच सकती हूँ, सबका चार्ट बाबा दिखा रहा है, सबके अन्दर क्या लहर है, वह भी देख रही हूँ। भक्त जो मुझे देवी के रूप में याद करते हैं, वह देवी के रूप में भक्त कैसे साधना करते हैं, वह भी बाबा दिखा रहा है और साइंस वालों को भी दिखा रहा है, कैसे साइंस वाले हमारी साइलेन्स पावर को जानने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर भी वह कौन सी शक्ति है जो शरीर को चलाती है और जो राज्य सत्ता है, वह भी कैसे चल रही है वह भी बाबा दिखा रहा है..। दादी ने कहा मुझे तो बड़ा मजा आ रहा है। हमने कहा हमको मजा नहीं आ रहा है। दादी के कमरे में जाने से लगता है खाली-खाली, रिमझिम वाला स्थान खाली-खाली हो गया है। दादी ने मुस्कराया, बाबा ने कहा अभी बच्ची समय को समीप लाना है। बहुत दु:ख, भ्रष्टाचार अति में जा रहा है, और बच्चे जो हैं वह अभी भी छोटी-छोटी बातों में जैसे कोई गुडियों का खेल करे ना, ऐसे छोटी छोटी बातों में समय लगा रहे हैं, अभी भी अपना शक्ति रूप प्रैक्टिकल में लाने का सोचते हैं, लेकिन कर नहीं पा रहे हैं। मैंने कहा बाबा कोशिश तो सभी कर रहे हैं, बाबा ने कहा कोशिश कर रहे हैं, मैं भी बच्चों की मेहनत देख नहीं सकता हूँ। तो दीदी ने क्या किया, दीदी दादी को ऐसे हाथ में लेकर बोली, दादी हमारी सखी है ना, तो हमारे को भी साथ देगी ना। मम्मा तो ऐसी मीठी दृष्टि दादी को दे रही थी, जो एकदम जैसे समान स्थिति वाले होते हैं, एक दो में मिलते हैं तो कैसे मिलते हैं, मम्मा दादी को ऐसे दृष्टि दे रही थी। यह सीन भी पूरी हुई फिर बाबा ने कहा कि बच्ची यह भी आपने एक एक्जैम्पुल देखा, किस बात का? बाबा अभी बार-बार सभी बच्चों को कहते हैं, अचानक और एवररेडी। दादी की दोनों बातों में विशेषता देखी, एक एक्जैम्पुल दादी का देखा, कुछ याद आया? कोई बात याद आई? अपने शरीर से भी न्यारी हो गई। और साथ-साथ अचानक ही दादी चली गई।

तो यह भी ड्रामा में बच्चों के लिए दादी का एक दृष्टान्त है कि जो बाबा ने कहा था, अचानक होना है और एवररेडी रहना है। तो दादी ने सभी को यह पाठ पढ़ाया है कि सभी का अगर दादी से प्यार है, तो सभी को एवररेडी माना बाप समान बनना है। देह भान से न्यारे कर्मातीत यानी कर्म करते भी न्यारे और प्यारे रहना है। तो दादी ने भी कहा कि जैसे ब्रह्मा बाबा कहते हैं कि बाप की जो भी शिक्षायें मिली हैं, पालना मिली है, उसका साकार स्थिति में रेसपान्ड दो। संकल्प में रेसपान्ड दो, वाणी में रेसपान्ड दो, कर्मयोगी स्थिति में रेसपान्ड दो। तो मेरी तरफ से सभी मेरी बहनों और भाईयों को कहना कि अगर मेरे से प्यार है तो प्यार की मैं यही निशानी देखने चाहती हूँ। जैसे ब्रह्मा बाबा कहता है प्यार की निशानी बाप समान बनो। ऐसे आप सभी कहते हो दादी से बहुत प्यार है, तो दादी भी दो शब्द बोलने चाहती है। दादी ने कहा कि जैसे मैंने बाबा को फॉलो करते स्वमान में रहकर के छोटे-बड़े को सम्मान दिया, दुआयें ली, आज दुआओं का इनाम बाबा मुझे दे रहा है। तो आप सभी भी यह दो शब्द स्वप्न में भी नहीं भूलना कि स्वमान में रहना है और हर छोटे-बड़े को सम्मान देके खुद भी परिवर्तन होना है और औरों को भी परिवर्तन करना है। यह मेरी तरफ से सभी मेरी सखियों को, मेरे भाईयों को सन्देश देना तो अभी बहुत टाइम बीत गया, अभी घर चलना है, तो दीदी ने बीच में ही कहा, यह तो मेरी बात आपने कह दी, मुझे तो घर बहुत याद आता था, मेरा तो गीत ही यही था कि अब घर जाना है। तो जो भी एडवांस पार्टी वाले थे, उन सबने भी कहा कि हम सब भी आपको कहते हैं, हम सब आपका इन्तजार कर रहे हैं, मुक्तिधाम का गेट भी आप सबका इन्तजार कर रहा है इसलिए दुआयें लो और यही सहज पुरुषार्थ करके अभी जल्दी-जल्दी वतन में आ जाओ। ऐसे सभी ने याद दी। फिर बाबा ने कहा कि आपको पता है कि दादी जब आई तब क्या क्या हुआ? तो बाबा ने दादी को कहा कि आप इन्हें बताओ। तो दादी ने कहा बाबा आप ही सुनाओ। तो बाबा ने कहा कि जब दादी वतन में पहुंची तो प्रकृति के पांच ही तत्वों ने सूक्ष्म स्वरूप से दादी का स्वागत किया और दादी बाबा के दिल तख्त पर आकर बैठ गई। तो बाबा ने कहा प्रकृति ने क्यों स्वागत किया? क्योंकि दादी की अन्तिम स्टेज प्रकृति जीत, मायाजीत थी। तो प्रकृति ने भी स्वागत किया और बाबा ने भी नयनों से स्वागत किया।

फिर तो एडवांस पार्टी वाले सब मर्ज हो गये। और बाबा ने यहाँ दादी जानकी और सब दादियों को, मोहिनी मुन्नी और कुछ भाईयों को इमर्ज किया, दादी ने सबको ऐसी मीठी दृष्टि दी, उसमें स्नेह भी था शक्ति भी थी, ऐसे लग रहा था जैसे सभी को दादी लाइट और माइट का दृष्टि से वरदान दे रही है। दादी के नयन खुले हुए थे लेकिन नयनों से लाइट की किरणें निकल रही थी और जो भी वहाँ इमर्ज हुए तो जैसे दादी के नयनों द्वारा किरणें पहुंच रही थी और सभी ने दादी से बहुत अव्यक्त मिलन मनाया। ऐसे कहते बाबा ने कहा बच्ची अभी तो दादी मेरे पास है, आप सभी भी अव्यक्त स्थिति में दादी से वतन में मिलते रहना, लेकिन अव्यक्त रूप में आयेंगे तभी मिलेंगे। अगर दादी से प्यार है तो अव्यक्त रूप में दादी से रोज मिल सकते हो, यहाँ तो जितने आने चाहें उतने आ सकते हैं। ऐसे दादी ने भी याद दी और कहा बस मेरे यह दो शब्द याद रखना - स्वमान और सम्मान। ऐसे कहते बाबा ने हमको छुट्टी दी।

मैंने कहा दादी आपको मुन्नी और मोहनी बहुत याद दे रही हैं, उन्हों के नयन भर आते हैं। तो दादी ने कहा मेरे से मिलने रोज़ वतन में आ जाना। ऐसे कहते दादी ने सबको दृष्टि दी और कहा मेरी तरफ से सबको बहुत-बहुत समान बनने की दुआ देना। फिर तो मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।